

पान ६.- नागपूर, सोमवार, दि. ३१ मे १९९९

सातवा



नृत्य कार्यशाला आयोजित

नागपूर, 25 जून. व्या. प्र.

निर्झर कला संस्थान द्वारा 5 दिवसीय नृत्य कार्यशाला का आयोजन जीजामाता सांस्कृतिक भवन, शंकरनगर में किया गया. कार्यशाला में पं. गोपीकृष्ण की शिष्या श्रीमती रेखा नाडगौड़ (नासिक) ने प्रशिक्षण दिया. प्रशिक्षण हेतु अकोला, अमरावती, जलगांव से प्रशिक्षणार्थी आये थे. यह जानकारी निर्झर कला संस्थान की श्रीमती मेघना नाफडे ने दी.

निर्झर कला संस्थानची 'कला यात्रा' गोव्यात सादर

शहर वार्ताहर

नागपूर, २४ मे

येथील निर्झर कला संस्थानने गोव्यातील कला अकादमीच्या निमंत्रणावरून नुकतेच पणजी येथे दीनानाथ मंगेशकर कला मंदिरात व फोंडा येथील राजीव कला मंदिरात आपले कलाविष्कार सादर केले.

नागपूरच्या सांस्कृतिक क्षेत्रात निर्झरने एक वेगळे स्थान निर्माण केले आहे आणि आता राष्ट्रीय पातळीवर देखील कलेचा प्रचार व प्रसार करण्यास अग्रेसर आहे. आंतरराज्यीय सांस्कृतिक देवाण-घेवाण अंतर्गत निर्झर कला संस्थान व कला अकादमी, गोवा यांनी ठेवलेले हे पहिले पाऊल होते. 'कला यात्रा'चे यशस्वी आयोजन करणाऱ्या निर्झरने

गोव्यातील संस्कृतीचा प्रचार-प्रसार करण्यासाठी कला अकादमीच्या कलाकारांना ऑक्टोबर महिन्यात तीन दिवसांच्या समारोहासाठी आमंत्रित केले आहे. या कला यात्रेत डॉ. सौ. साधना नाफडे यांनी कथक नृत्य शैली सादर केली. या दौऱ्यात भूपाळी देशपांडे, मंजुषा सोनबरसे, निलाक्षी खंडकर, शिवांगी डाके, दुर्वा पाटील, रुही मासोदकर, अनुश्री केदार या कलाकारांचा समावेश होता. या सर्व कलाकारांना समीर नाफडेने तबल्यावर, उ. मुन्ने खानने सारंगीवर, योगेश बोडे यांनी सतारवर साथ दिली. पद्मश्री प्रसाद सावरकर यांच्या हस्ते या कलायात्रेचे उद्घाटन झाले होते. यावेळी पांडुरंग फळदेसाई, गोवादूतचे संपादक लक्ष्मणराव जोशी, प्रवीण भोजराज प्रामुख्याने उपस्थित होते.

मनीषा साठे यांची कथक

नृत्य कार्यशाळा रविवारपासून

शहर वार्ताहर

नागपूर, २४ मे

स्थानिक निर्झर कला संस्थानतर्फे येत्या २८ मे ते १ जूनदरम्यान एका पाचदिवसीय कथक नृत्य कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले आहे. पुण्याच्या प्रसिद्ध नृत्यांगना व पं. गोपीकृष्णजींच्या शिष्या सौ. मनीषा साठे या कार्यशाळेत मार्गदर्शन लाभणार आहे.

सौ. साठे यांनी आतापर्यंत भारतातील बहुतांश मोठ्या समारंभांसह स्वीडन, इंग्लंड, अमेरिका, कॅनडा, बहारीन व जपान येथीही आपली कला प्रदर्शित करून चांगला ठसा उमटविला आहे. याशिवाय सौ. मनीषा साठे मुंबई टीव्ही व इतरही दूरचित्रवाहिन्यांवर सातत्याने नृत्य दिग्दर्शनाचे काम करित असतात. जपानच्या सुप्रसिद्ध संगीतकार व तालवादक याशुहितो ताकिमोनो यांच्यासमवेत त्यांचे अनेक प्युजनचे कार्यक्रम झाले आहेत.

त्यांनी 'वारसा लक्ष्मीचा', 'सरकारनामा' व 'तारुण्याच्या लाटेवर' या मराठी चित्रपटांना नृत्य दिग्दर्शन केले आहे. तारुण्याच्या लाटेवर या चित्रपटासाठी त्यांना अल्फा पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले आहे. सौ. साठे सध्या पुणे विद्यापीठाच्या सेंटर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्समध्ये अधिव्याख्याता म्हणून कार्यरत आहेत.

सौ. साठे यांच्या मार्गदर्शनाखाली होणाऱ्या या कार्यशाळेत किमान पाच वर्षे कथक नृत्याचे शिक्षण घेतलेल्या विद्यार्थीनींनाच भाग घेता येणार आहे. ही कार्यशाळा विदर्भ साहित्य संघाच्या सांस्कृतिक संकुलात रोज सकाळी ९ ते सायं. ५ पर्यंत होईल.

इच्छुकांनी प्रवेशासाठी निर्झर कला संस्थानच्या दूरध्वनी क्रमांक २२२६४५१ वर संपर्क साधावा.

पान ६.- नागपूर, सोमवार, दि. ३१ मे १९९९

सातवा



नृत्य कार्यशाला आयोजित

नागपूर, 25 जून. व्या. प्र.

निर्झर कला संस्थान द्वारा 5 दिवसीय नृत्य कार्यशाला का आयोजन जीजामाता सांस्कृतिक भवन, शंकरनगर में किया गया. कार्यशाला में पं. गोपीकृष्ण की शिष्या श्रीमती रेखा नाडगौड़ (नासिक) ने प्रशिक्षण दिया. प्रशिक्षण हेतु अकोला, अमरावती, जलगांव से प्रशिक्षणार्थी आये थे. यह जानकारी निर्झर कला संस्थान की श्रीमती मेघना नाफडे ने दी.

विश्वबंध मुनि भरत महात्मन्, अभिवादन ! अभिवादन

जगदीश शाह >> नागपुर, १३ मार्च.

भारतीय शास्त्रीय कलाओं को संजीवित करने के लिए २४ वर्ष पूर्व लखनऊ से आरंभ 'संस्कार-भारती' की नागपुर इकाई ने आज संध्या लक्ष्मीनगर स्थित 'बालजगत' के कमलताई वैद्य सभागार में २४०० वर्ष पूर्व पांचवें वेद नाट्यशास्त्र (नाट्यवेद) के प्रणेता विश्वबंध मुनि भरत महात्मन् / अभिवादन, अभिवादन'... भावबोध से ओतप्रोत भरतमुनि की जयंती शास्त्रीय नृत्य-नाट्य और गायन की सटीक प्रस्तुतियों के साथ 'भरतमुनि-जयंती' मनायी.

कार्यक्रम की अध्यक्षता बालजगत की संस्थापिका, वयोवृद्ध समाज सेविका सुमतिताई सुकलीकर ने की जबकि मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार श्रीपाद कोठे थे. मंच पर वरिष्ठ संगीतकार प्रभाकर देशकर, बंडोपंत रोडे, प्रा.

अनिल जोशी प्रमुखता से मौजूद थे.

जयंती का प्रमुख आकर्षण

रही, नगर की नवोदिता कथक नर्तकी, साधना नाफड़े व पुणे की शमा माटे की शिष्या शुभांगी डाके. यों, नृत्य (कथक) का आरंभ किया निर्झर नृत्य साधना केंद्र की तीन छात्राओं मंजूषा सोनबरसे, मीनाक्षी खांडेकर और रोही मासुरकर ने 'शंकर शिव गंगाधर' गीत और शिव के कामारि-रूप पर अपनी समूह प्रस्तुति से.

शुभांगी ने अपनी आमद के साथ ही अपनी देहभाषा से लोगों में कौतुहल जगाया. पहले निलंबित में अभिनय-अंग और



संस्कार भारती ने मनायी भरत मुनि जयंती

रविवार संध्या, बालजगत में आयोजित भरतमुनि जयंती में निर्झर नृत्य साधना केंद्र की युवा नर्तकियां मंजूषा, मीनाक्षी और रोही कथक प्रस्तुत करती हुई.

पढन्त के साथ तत्कार और फिर परनें. परनों के दौरान ही तबले के बोलों के साथ थोड़ी सी 'जुगलबंदी'. कुल मिलाकर संक्षिप्त-किंतु-मधुर अनुभव, और यह प्रतीति कि शुभांगी नगर का

एक उज्ज्वल भविष्य है.

श्रीमती अंजलि खेर ने दो नाट्य गीतों 'प्रीति सुरी दुधारी/ निसिदिन सरले जिह्वारी' तथा 'जय गंगे भागीरथी' के जरिए अपने स्वर

सौष्ठव का परिचय दिया. नृत्य व गायन में तबले पर राम ढोक व हार्मोनियम पर संगत किया संदीप गुरुनुले ने.

नाट्य प्रस्तुति के रूप में प्रकाश देवा व

श्रीदेवी देवा दम्पति ने 'कुलकर्णी' नामक एक सफल हास्य एकांकी बिना किसी मंच सज्जा-वेशभूषा पेश एकांकी ने दाम्पत्य के आरंभ का चित्रण तमाम नॉक-ड्रोक सहज किंतु सशक्त तरीके से किया. आरंभ में पत्रकार श्री कोठे नाट्य शास्त्र पर विस्तार से प्रकाश कहा कि मौजूदा नाटकों में 'त्रैलोक्य के भाव-विभाव का अंश तेजी से छीजता जा रहा है.

हालांकि अब टीवी माध्यमों से प्रकट होने वाले नाट्यविधा ही है किंतु रस निरंतर आराधना' अथवा लोक-प्रबोधन जा रहा है. उन्होंने कहा कि भरत का पालन कर ही भारतीयता के बचाया जा सकता है.

समारोह के अध्यक्ष पद से इस बात पर खुशी जतायी कि दिल्ली गयी पहली ही प्रविष्टि प्रथम थी. उन्होंने कहा कि संस्कार अभिप्रेत भारतीय संस्कृति का वि

आरंभ में श्रीमती मंदाकिनी चांडक, अभय अंजीकर व श्याम अतिथियों का पुष्पगुच्छ से सत्कार संस्कार-गीत व मुकुंद पुल्लरवार भरतमुनि-गीत कीर्ति पंडित व उन ने पेश किया.

सभास्थल पर वरिष्ठ गडकरी, नृत्यगुरु मदन पांडिया, श्रीमती कांचन गडकरी समेत प्रबुद्ध दर्शक मौजूद थे.

BRIEFS**MARRIAGEABLES'
MEETING IN FEB**

THE Maharashtra Arya Vaishya Samaj has organised a 'Vadhu Var Parichay Melawa' on February 4 and 5 at the Ladies club, Civil Lines. Gopalrao Kondawar, Director, Jagdamba Realtors, is the President of the organising committee while Raju Mukkawar is the Secretary. Ultra modern electronic facilities will be provided at the camp and food, snacks, will also be provided at nominal rates at the venue.

Bhaurao Birewar, Atul Yamsanwar, Raju Duddalwar, Dr Sudhir Kunnawar, Dr Pravin Gadewar, Raju Kunnawar and others are working hard for the camp. Interested should contact Gajanan Kotawar (mobile number 9823047979) or Adv Chandrakant Padmawar (mobile number 9822467701), a press release has informed.



Budding dancers of Nirzar Kala Sansthan presenting a *Deepa Nritya* at a cultural extravaganza organised to mark Silver Jubilee year of Sanskar Bharati. *Sanskritik Chetna Abhiyaan* has been launched to celebrate the foundation day. Vishram Jamdar, National President of Laghuudhyog Bharati, presided over the function held at Dharampeth Girls School, North Ambazari Road, on Wednesday. (Pic by Anil Futane)

विश्वबंध मुनि भरत महात्मन्, अभिवादन ! अभिवादन

जगदीश शाह >> नागपुर, 12 मार्च.

भारतीय शास्त्रीय कलाओं को संजीवित करने के लिए २४ वर्ष पूर्व लखनऊ से आरंभ 'संस्कार-भारती' की नागपुर इकाई ने आज संध्या लक्ष्मीनगर स्थित 'बालजगत' के कमलताई वैद्य सभागार में २४०० वर्ष पूर्व पांचवें वेद नाट्यशास्त्र (नाट्यवेद) के प्रणेता विश्वबंध मुनि भरत महात्मन् / अभिवादन, अभिवादन'... भावबोध से ओतप्रोत भरतमुनि की जयंती शास्त्रीय नृत्य-नाट्य और गायन की सटीक प्रस्तुतियों के साथ 'भरतमुनि-जयंती' मनायी.

कार्यक्रम की अध्यक्षता बालजगत की संस्थापिका, वयोवृद्ध समाज सेविका सुमतिताई सुकलीकर ने की जबकि मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार श्रीपाद कोठे थे. मंच पर वरिष्ठ संगीतकार प्रभाकर देशकर, बंडोपंत रोडे, प्रा.

अनिल जोशी प्रमुखता से मौजूद थे.

जयंती का प्रमुख आकर्षण

रही, नगर की नवोदिता कथक नर्तकी, साधना नाफड़े व पुणे की शमा माटे की शिष्या शुभांगी डाके. यों, नृत्य (कथक) का आरंभ किया निर्झर नृत्य साधना केंद्र की तीन छात्राओं मंजूषा सोनवरसे, मीनाक्षी खांडेकर और रोही मासुरकर ने 'शंकर शिव गंगाधर' गीत और शिव के कामारि-रूप पर अपनी समूह प्रस्तुति से.

शुभांगी ने अपनी आमद के साथ ही अपनी देहभाषा से लोगों में कौतुहल जगाया. पहले निलंबित में अभिनय-अंग और



संस्कार भारती ने मनायी भरत मुनि जयंती

रविवार संध्या, बालजगत में आयोजित भरतमुनि जयंती में निर्झर नृत्य साधना केंद्र की युवा नर्तकियां मंजूषा, मीनाक्षी और रोही कथक प्रस्तुत करती हुई.

पढन्त के साथ तत्कार और फिर परनें. परनों के दौरान ही तबले के बोलों के साथ थोड़ी सी 'जुगलबंदी'. कुल मिलाकर संक्षिप्त-किंतु-मधुर अनुभव, और यह प्रतीति कि शुभांगी नगर का

एक उज्वल भविष्य है.

श्रीमती अंजलि खेर ने दो नाट्य गीतों 'प्रीति सुरी दुधारी/ निसिदिन सरले जिह्वारी' तथा 'जय गंगे भागीरथी' के जरिए अपने स्वर

सौष्ठव का परिचय दिया. नृत्य व गायन में तबले पर राम ढोक व हार्मोनियम पर संगत किया संदीप गुरुनुले ने.

नाट्य प्रस्तुति के रूप में प्रकाश देवा व

श्रीदेवी देवा दम्पति ने 'कुलकर्णी' नामक एक सफल हास्य एकांकी विना किसी मंच सज्जा-वेशभूषा पेश एकांकी ने दाम्पत्य के आरंभ का चित्रण तमाम नोक-झोंक सहज किंतु सशक्त तरीके से किया. आरंभ में पत्रकार श्री कोठे नाट्य शास्त्र पर विस्तार से प्रकाश कहा कि मौजूदा नाटकों में 'त्रैलोक्य के भाव-विभाव का अंश तेजी से छीजता जा रहा है.

हालांकि अब टीवी माध्यमों से प्रकट होने वाले नाट्यविधा ही है किंतु रस निरंतर आराधना' अथवा लोक-प्रबोधन जा रहा है. उन्होंने कहा कि भरत का पालन कर ही भारतीयता के बचाया जा सकता है.

समारोह के अध्यक्ष पद से इस बात पर खुशी जतायी कि दिल्ली गयी पहली ही प्रविष्टि प्रथम थी. उन्होंने कहा कि संस्कार अभिप्रेत भारतीय संस्कृति का वि

आरंभ में श्रीमती मंदाकिनी चांडक, अभय अंजीकर व श्याम अतिथियों का पुष्पगुच्छ से सत्कार संस्कार-गीत व मुकुंद पुल्लवार भरतमुनि-गीत कीर्ति पंडित व उन ने पेश किया.

सभास्थल पर वरिष्ठ गडकरी, नृत्यगुरु मदन पांडिया, श्रीमती कांचन गडकरी समेत प्रबुद्ध दर्शक मौजूद थे.

शिवांगी... नृत्याची देवता असलेल्या नटराजरूपी शिवाची आराधना करणारी! अगदीच अल्पवयात कथकनर्तिका म्हणून प्रसिद्धी मिळवून शिवांगीने तिच्या आई-वडिलांनी ठेवलेलं नाव तिने सार्थ करून दाखविले आहे. एवढेच नव्हे तर, अत्यंत परिश्रमपूर्वक शिकलेली ही नृत्यकला ती आज कितीतरी मुलींना शिकवत आहे.

लहानपणापासूनच नृत्याची आवड असणारी शिवांगी डाके वयाच्या ७ व्या वर्षापासूनच तिच्या गुरू साधना नाफडे यांच्याकडे कथक नृत्याचे धडे गिरवित आहे. तिची पाहून तिची आई-जानकी डाके यांनी तिचे नाव नृत्य-वर्गात घातले. व या गोष्टीला तिचे वडील प्रमोद डाके यांनीही पाठिंबा दर्शविला आणि नृत्यात तिचे वडील-प्रमोद डाके यांनी तर तिला नृत्यातच आपले करिअर करण्याचा सल्ला दिला. त्यानुसार मार्गदर्शनही केले. हिंमत दिली.

बालवयातच तिने एक चांगली शास्त्रीय नर्तिका होण्याची खूणगाठ मनाशी बांधली आणि त्या दिशेने तिची नाजूक नुपूर-पावलं वळू लागली. आज ती नृत्यात विशारद आणि अलंकार परीक्षा उत्तीर्ण झाली आहे. ठिकठिकाणी गणेशोत्सवांमधून होणाऱ्या कार्यक्रमांमधून तिने नृत्य सादर करण्यास सुरुवात केली. त्यानंतर कुचिपुडी नृत्य महोत्सव, नुपूरनिशा, नृत्योत्सव, आरंभ महोत्सव इत्यादी राज्य आणि राष्ट्रीय पातळीवर होणाऱ्या विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमांमध्ये आपली कला सादर करून स्वतःच्या कौशल्याची उत्कृष्ट छाप रसिकांच्या मनावर सोडू लागली. तिला विविध पुरस्काराने गौरविण्यात आले.

हैदराबाद येथे आयोजित 'संस्कार भारती'च्या अखिल भारतीय नृत्योत्सवात तिला 'नृत्यकला प्रवीण' तर, भिलाई येथील अखिल भारतीय नृत्यस्पर्धेत 'नृत्यश्री' पुरस्कार प्रदान करून तिच्या साधनेची सन्मानीय दखल घेण्यात आली. भारतीय सांस्कृतिक संबंध केंद्रातर्फे (आय. सी. सी. आर.) तिला शिष्यवृत्ती देण्यात आली. राष्ट्रीय स्तराचे कथक नृत्यगुरू क्षमा भाटे यांच्या मार्गदर्शनाखाली दोन वर्षे शिकायची संधी तिने प्राप्त केली.

कथक नृत्यात लखनवी आणि जयपुरी पद्धत सर्वात अवघड पण दर्जेदार मानण्यात येते. शिवांगीने या दोन्ही पद्धतीत प्राविण्य प्राप्त केले आहे. याशिवाय टी. व्ही. वर

होणाऱ्या विविध कार्यक्रमात पाश्चिमात्य नृत्यसुद्धा तिने सादर केले आहे. परंतु "पाश्चिमात्य नृत्य कितीही आकर्षक वाटत असले तरी, शास्त्रीय नृत्याची गोडी अवीट आहे. शास्त्रीय नृत्य करताना व शिकवतानाही मला मनापासून आनंद मिळतो. नृत्यात मी अजूनही काहीच नाही. मला नृत्यातलं

सर्वांचे क्षितिज गाठायचं आहे. त्यासाठी खूप साधना करावी लागणार आहे. पण ही सर्व साधना करायला मी तयार आहे. एकदा मनाशी ठरवलं की, मागे वळून बघायचं नाही, या मताची मी आहे." पायातील नुपूर सोडत, ओढणीने चेहऱ्यावरचे घामाचे बिंदू टिपत ती बोलत असते.

शिवांगी फक्त नृत्यातच अग्रेसर नाही तर शिक्षणातही पुढे आहे. कलाशाखेतील पदवी परीक्षा तिने चांगले गुणे घेऊन उत्तीर्ण केली आहे. आता ती मास्टर ऑफ फाईन आर्ट्स (एम. एफ. ए.) च्या शेवटच्या वर्षाला आहे. हे झाल्यावर तिला पुढे इंग्रजी साहित्यात एम. ए. करायचे आहे.

"उपजीविकेसाठी मी दुसरी कुठलीही नोकरी करणार नाही. नृत्यकला हेच माझ्या उपजीविकेचे साधन असून ते माझ्यासाठी खूप जिवाळ्याचे आहे. नृत्य हेच माझं सर्वस्व आहे", असे ती ठामपणे सांगते.

तसं बघितलं तर, आजच्या स्पर्धात्मक जीवनात अत्यंत आकर्षक जीवनमार्ग खुणावत असताना, शिवांगी जाणीवपूर्वक पारंपरिक नृत्याचा मार्ग आपले करिअर म्हणून निवडते; हे विलक्षण आहे. तिच्या या विलक्षण मार्गक्रमणाला आपण हार्दिक शुभेच्छा दिल्या पाहिजेत.

श्रमिका



नृत्यालाच सर्वस्व मानणारी

शिवांगी डाके



नृत्य सादर करताना शिवांगी डाके